Dated 12/09/2020

B.A part 2(H) Philosophy

प्रo अनीता कुमारी गुप्ता
के० के० कॉलेज बिहार

Date / /
Page

लाइबनिज के चिदणुवाद की व्याख्या करें।

Ans:-> लाइबनित्ज ने जिस द्रव्य की कल्पना की उसका नाम चिदणु रखा ये चिदणु अनेक तथा चैतन्य है। विश्व में जड़ तत्व का अस्तित्व नहीं है। ये चिदणु असंख्य हैं तथा प्रत्येक में वही गुण पाये जाते हैं जो स्पिनोजा के द्रव्य में हैं। प्रत्येक चिदणु शाश्वत एवं स्वयं में पूर्ण है। प्रत्येक चिदणु में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड है जिसमें भूत, वर्तमान एवं भविष्य की सभी घटनाएँ निहित हैं। इसी कारण चिदणु को ऐसा अणु माना गया है जिसमें विराट विश्व है। इस अणु में आदि एवं अंत सभी निहित हैं, इसमें अतीत की सभी घटनाएँ एवं भविष्य में घटने वाली घटनाएँ भी बीज रूप में विद्यमान हैं। प्रत्येक चिदणु स्वतंत्र एवं आत्मनिर्भर सत्ता है। किसी भी चिदणु को अन्य चिदणुओं की आवश्यकता नहीं होती है। चिदणु स्वतंत्र एवं आत्मनिर्भर सत्ता है। किसी भी चिदणु को अन्य चिदणुओं की आवश्यकता नहीं होती है। चिदणु एक-दूसरे पर निर्भर नहीं करता है और न ही एक दूसरे के साथ आदान-प्रदान संभव है क्योंकि प्रत्येक चिदणु गवाक्षहीन होता है।

लाइबनित्ज के मत में द्रव्य है जिसमें स्वतंत्र क्रियाशक्ति पाई जाती है अर्थात जिसमें अपनी विभिन्न परिवर्तनशील अवस्थाओं को धारण करने की क्षमता मौजूद है। इस जगत के प्रत्येक पदार्थ में कुछ न कुछ शक्ति पाई जाती है। प्रत्येक द्रव्य अपनी स्वतंत्र शक्ति एवं विशिष्टता के कारण ही द्रव्य कहलाने के योग्य होता है। द्रव्य एक शक्तिमान विशेष हैं चेतन परमाणु को ही लाइबनित्ज ने चिदणु कहा है जो सरल, निरवयव, अविभाज्य एवं शाश्वत होते हैं। चूँकि चिदणु अविभाज्य है, इसलिए शाश्वत एवं चेतन हैं। प्रत्येक चिदणु में प्रत्यक्ष (ईक्षण) एवं चरिष्णुता (प्रधावन) शक्तियाँ पाई जाती हैं। ईक्षण चिदणु की आंतरिक अभिव्यक्ति है जिसके अनुसार चिदणु में सम्पूर्ण विश्व को अभिव्यक्त करने की क्षमता निहित होती है। इसीलिए कहा गया है कि प्रत्येक चिदणु अपने रूप में विश्व का दर्पण है। प्रधावन परिवर्तन का सिद्धांत है जिसके परिणाम स्वरूप चिदणु एक प्रत्यक्ष से दूसरे प्रत्यक्ष की ओर स्वाभाविक विधि से अग्रसर होता है। प्रधावन शक्ति के कारण ही प्रत्येक चिदणु का अपनी दशाओं में क्रमबद्ध विकास होता है। सभी असंख्य चिदणुओं में एक अटूट श्रृंखला होती है, यह निम्न से उच्चतर की ओर क्रमबद्ध रहता है।